विवरणिका

विषय		पृष्ठ
आमुख		i
निर्देशक का प्रमाण–पत्र		ii
विवरणिका		iii-ix
पुरोवचन		x-xiv
प्रथम अध्याय :	नाट्य विषय	1–66
	1. नाट्य, नाटक एवं रूपक : व्युत्पत्ति, अर्थ एवं लक्षण	1
	2. भरत मुनि और नाट्यशास्त्र	7
	(क) नाट्यशास्त्र का वर्ण्य विषय	19
	(ख) नाट्यशास्त्र की टीकाएँ – 1. मातृगुप्त, 2. कीर्त्तिधर, 3, भट्ट उद्‌भट, 4. भट्ट लोल्लट, 5. शंकुक, 6. भट्टयंत्र, 7. घण्टक, 8. भट्ट सुमनस्, 9. भट्ट शंकर, 10. प्रियातिथि, 11. नान्यदेव, 12. भट्टनायक, 13. भट्टतौत, 14. अभिनवगुप्त, 15. श्रीहर्ष, 16. सिंगाचार्य, 17. रंगराज।	22
	(ग) नाट्यशास्त्र के आधार पर लिखे गए स्वतन्त्र ग्रन्थों के रचयिता–1. महेन्द्र विक्रम, 2. धनंजय, 3. सागरनंदी, 4. रामचन्द्र गुणचन्द्र, 5. रुय्यक, 6. शारदातनय, 7. नन्दिकेश्वर, 8. शिंग भूपाल, 9. अशोक मल्ल, 10. कुम्भकर्ण, 11. रूप गोस्वामी, 12. सुन्दर मिश्र,	26

	3. धनंजय : उनका दशरूपक एवं उसकी विशेषताएँ	31
	4. धनिक का समय, कृतित्व एवं अवलोक का महत्त्व	36
	5. रूपक के भेद 1. नाटक, 2. प्रकरण, 3. समवकार, 4. भाण, 5. वीथी, 6. प्रहसन, 7. व्यायोग, 8. उत्सृष्टिकांक, 9. ईहामृग, 10. डिम, 11. नाटिका	41
द्वितीय अध्याय :	**'रत्नावली' नाटिका : रचयिता, नाटिका के लक्षण एवं विवेच्य नाटिका में समन्वय**	67–108
	1. 'रत्नावली' नाटिका के रचयिता हर्षदेव (क) हर्ष का समय एवं जीवन–वृत्त – 1. बलभी नरेश से युद्ध, 2. सिन्धुराज के साथ युद्ध, 3. पुलकेशिन् द्वितीय के साथ युद्ध, 4. द्वितीय पूर्वी सैनिक अभियान, 5. हर्ष और नेपाल, 6. कश्मीर का राज्य, 7. हर्ष तथा कामरूप, 8. हर्ष और दक्षिण भारत, 9. प्रयाग का पंचवर्षीय दानोत्सव, 10. हर्ष का मूल्यांकन (ख) हर्ष की रचनाएँ – 1. रचनाओं का वस्तु–विन्यास, 2. हर्ष का नाट्य वैशिष्ट्य	67
	2. नाटिका का लक्षण एवं 'रत्नावली' नाटिका में उसका समन्वय	103

तृतीय अध्याय :	**कथावस्तु का विवेचन एवं 'रत्नावली' नाटिका की समीक्षा**	109–196
	1. कथावस्तु के भेद– (क) पताका, (ख) प्रकरी, (ग) पताका स्थानक	109
	2. कार्य की पाँच अवस्थाएँ एवं नाटिका में उनका समन्वय (1) प्रारम्भ, (2) प्रयत्न, (3) प्राप्त्याशा, (4) नियताप्ति, (5) फलयोग या फलागम,	115
	3. पंचसन्धियों का विवेचन एवं नाटिका में उनका समन्वय 1. मुख सन्धि तथा उसके बारह अंग, 2. प्रतिमुख सन्धि तथा उसके तेरह अंग, 3. गर्भ सन्धि और उसके तेरह अंग, 4. विमर्श या अवमर्श सन्धि तथा उसके तेरह अंग, 5. निर्वहण सन्धि–निर्वहण सन्धि के अंग,	117
	4. सूच्य वस्तु का विवेचन–अर्थोपक्षेपक के पाँच भेद– (1) विष्कम्भक, (2) प्रवेशक, (3) चूलिका, (4) अंकास्य या अंकमुख, (5) अंकावतार	183
	5. नाट्यधर्म की दृष्टि से भेद (1) सर्वश्राव्य या प्रकाश (2) नियतश्राव्य–(क) जनान्तिक, (ख) अपवारित (3) अश्राव्य (4) आकाशभाषित	188
	6. 'रत्नावली' नाटिका की कथावस्तु एवं उसकी समीक्षा	190
	7. संस्कृत साहित्य में 'रत्नावली' का स्थान	195

चतुर्थ अध्याय :	पात्र विवेचन	197–239
	1. नाटिका के नायक का लक्षण एवं 'रत्नावली' नाटिका में उसका समन्वय (क) शील, गुण, स्वभाव आदि की दृष्टि से नायकों के भेद–(1) धीरोद्धत, (2) धीरललित, (3) धीरोदात्त, (4) धीरप्रशान्त (ख) श्रृंगारी प्रकृति के आधार पर नायकों के भेद–(1) दक्षिण नायक, (2) शठ नायक, (3) धृष्ट नायक, (4) अनुकूल नायक (ग) नायकों के सात्त्विक गुण–(1) शोभा, (2) विलास, (3) माधुर्य, (4) गाम्भीर्य, (5) स्थैर्य, (6) तेज, (7) ललित, (8) औदार्य (घ) नाटिका का नायकत्व	196
	2. नाटिका में नायिका का स्वरूप विवेचन तथा 'रत्नावली' नाटिका में उसका स्थान (क) नायिका के सामान्य भेद–1. स्वकीया, 2. परकीया, 3. साधारण। (ख) नायक–नायिका संबंध के आधार पर – 1. वासकसज्जा, 2. विरहोत्कंठिता, 3. स्वधीनपतिका, 4. कलहान्तरिता, 5. खण्डिता, 6. विप्रलब्धा, 7. प्रोषितभर्तृका, 8. अभिसारिका (ग) नायिकाओं के अलंकार–(1) अंगज अलंकार (भाव, हाव, हेला), (2) स्वभावज अलंकार (लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित्, मोट्टायित, कुट्टमित, बिब्बोक, ललित, विद्धत, मद, तपन, मौगध्य, विक्षेप, कुतूहल, हसित, चकित, केलि)	211

	(3) नायिकाओं के अयत्नज अलंकार–शोभा, कान्ति, दीप्ति, माधुर्य, प्रगल्भा, धैर्य, औदार्य	
	3. नाटिका की नायिका : रत्नावली	228
	4. अन्य पुरुष पात्र–1. विदूषक, 2. यौगन्धरायण	230
	5. अन्य स्त्री पात्र–1. वासवदत्ता, 2. कांचनमाला, 3. सुसंगता।	236
पंचम अध्याय :	**रस विवेचन**	**240–286**
	1. रस–शब्द मीमांसा	240
	2. रसों के अंग/अवयव/तत्त्व (क) भाव, (ख) विभाव, (ग) अनुभाव एवं सात्विक भाव, (घ) व्यभिचारी या संचारी भाव, (ङ) स्थायी भाव	248
	3. श्रृंगार रस का स्वरूप एवं 'रत्नावली' नाटिका में उसकी स्थिति (क) श्रृंगार का रसराजत्व, (ख) श्रृंगार के प्रकार, (ग) श्रृंगार के अंग–(i) संयोग श्रृंगार के अंग, (ii) वियोग (विप्रलम्भ श्रृंगार के अंग), (घ) **'रत्नावली'** नाटिका में श्रृंगार रस की स्थिति।	265
षष्ठ अध्यायः :	**नाट्य वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों का विवेचन**	**287–337**
	नाट्य वृत्तियाँ : एक विवेचन	287
	1. सात्त्वती, कैशिकी एवं आरभटी वृत्तियों का स्वरूप एवं 'रत्नावली' नाटिका में उनकी स्थिति – 1. सात्त्वती वृत्ति (उत्थापक, परिवर्तन, संलापक, सांघात्य); 2. कैशिकी वृत्ति (नर्म, नर्म स्फूज, नर्म गर्भ, नर्भस्फोट), 3. आरभटी वृत्ति (संक्षिप्त या संक्षिप्तिका अवपातन, वस्तूत्थापन, संफेट)।	290

	2. नाट्य वृत्तियों का रसों से संबंध एवं 'रत्नावली' नाटिका में उसकी अवस्थिति (कैशिकी वृत्ति का शृंगार रस के साथ सम्बन्ध, आरभटी वृत्ति का रौद्र रस के साथ सम्बन्ध, सात्त्वती वृत्ति का वीर रस के साथ सम्बन्ध, सात्त्वती वृत्ति का शान्त रस के साथ सम्बन्ध)।	303
	3. नाट्य प्रवृत्ति – (अ) नाट्य प्रवृत्ति के भेद (दाक्षिणात्या, आवन्ती, पांचालमध्यमा, औड्र मागधी), (आ) नाट्य प्रवृत्ति के तत्त्व – (क) वेश–भूषा, (ख) पाठ्य (भाषा) तथा (ग) क्रिया – (i) वाचिक भाषा, (ii) अवाचिक भाषा {मुख मण्डल के संकेत, हस्त संकेत, पद संकेत, संयुक्त अंगों द्वारा अभिव्यक्ति} (iii) आमंत्रण (सम्बोधन) संबंधी प्रवृत्ति या निर्देश वचन (पूज्य पात्रों के प्रति, समान पात्रों के प्रति, कनिष्ठ पात्रों के प्रति)	313
सप्तम अध्याय :	**नाट्य प्रयोग : नाटक के आवश्यक अंगों का विवेचन**	**338–378**
	1. पूर्व रंग – (क) नान्दी, (ख) रंगद्वार, नान्दी तथा रंगद्वार : एक विवेचन, (ग) स्थापना	339
	2. भारती वृत्ति – भारती वृत्ति के अंग – 1. आमुख या प्रस्तावना, प्रस्तावना के भेद (1) कथोद्घात, (2) प्रवृत्तक या प्रवर्तक, (3) प्रयोगातिशय, (4) श्रवणक; 2. वीथी, वीथी के भेद – (1) उद्घातक, उद्घातक के भेद (क) प्रथम	348

	उद्घातक, (ख) द्वितीय उद्घातक, (2) अवलगित, अवलगित के भेद – (क) प्रथम अवलगित, (ख) द्वितीय अवलगित ;(3) प्रपंच; (4) त्रिगत, (5) छल, (6) वाक्केली, वाक्केली के भेद – (क) प्रथम वाक्केली, (ख) द्वितीय वाक्केली, (7) अधिबल, (8) गंड, (9) अवस्यन्दित या अवस्पन्दित, (10) नालिका, (11) असत्प्रलाप, इसके भेद – (क) प्रथम असत्प्रलाप, (ख) द्वितीय असत्प्रलाप, (ग) तृतीय असत्प्रलाप; (12) व्याहार, (13) मृदव, इसके भेद – (क) प्रथम मृदव, (ख) द्वितीय मृदव	
	3. प्रहसन, इसके अंग – (1) अवलगित, (2) अवस्कन्द, (3) व्यवहार, (4) विप्रलम्भ, (5) उपपत्ति, (6) भय, (7) अनृत, (8) विभ्रान्ति, (9) गद्गद् वाक्, (10) प्रमाप। वीथी तथा प्रहसन : एक विवेचन।	373
	4. प्ररोचना	376
समाकलन :	उपसंहार	379–389
परिशिष्ट :	सन्दर्भ सूची	390–396

☆☆☆☆☆